P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# उत्तर वैदिक युगीन प्रादेशिक राज्य एवं शासन पद्धतियाँ

**प्रताप विजय कुमार**
एसोसिएट प्रोफेसर,
प्राचीन इतिहास विभाग,
एच0आर0पी0जी0 कॉलेज
खलीलाबाद,
संत कबीर नगर, उ0 प्र0,
भारत

**सारांश**

उत्तर वैदिक काल में राज्य का विस्तार बढ़ने लगा था। अनेक विश या जन या कबीले एक राज्य में सम्मिलित होने लगे थे, जिसमें कुरू पंचाल की ही भांति और जन भी सम्मिलित हुए जो संभवतः राज्य का विस्तार सामान्यतः आधुनिक काल के कमिश्नरी (मण्डल) के अनुरूप ही रहे होंगे। कदाचित राजाओं को महाराज, सम्राट की पदवी भी दी जाती थी, जो बड़े विजेता थे। इस युग में कतिपय आदर्शों का उन्मेश हो रहा था तथा राज्य के संगठन में विकास दिखने लगा था। ऋग्वेद से स्पष्ट होता है कि उस काल में प्रायः जन राज्यों की परम्परा थी, जिनका कोई निश्चित भू–प्रदेश नहीं था। भ्रमणशील कबीलों की भाँति उनके राज्य भी बदलते रहते थे जो प्रवृत्ति उत्तर वैदिक युग तक अभी पूरी तरह से उन्मूलित नही हुए थे, परन्तु विवेच्य युग तक स्थायी प्रादेशिक राज्यों की स्थापना हो चुकी थी, जिनके शासक अब राष्ट्र या उस राज्य के स्वामी समझे जाने लगे थे, इससे प्रादेशिक राज्यों को पूर्ण विकास होने की सम्भावना स्पष्ट प्रमाणित होती है जिसके फलस्वरूप सर्वप्रथम जन–राज्य या प्रदेशिक राज्यों का विकास दृष्टिगत होता है।

**मुख्य शब्द :** राज्य, साम्राज्य, स्वाराज्य, भोज्य, वैराज्य, जनतंत्र, ऐन्द्रमहाभिषेक, विराड, वाजपेय, राजसूय, एकराट्, जन एवं विश।

**प्रस्तावना**

उत्तर वैदिक काल में आदर्शो के उन्मेश के फलस्वरूप सामाजिक संस्थाओं और राज्य संगठनों का विकास दिखाई देता है। ऋग्वेद से ज्ञात होता है कि उस काल में प्रायः जन राज्यों की ही परम्परा विद्यमान थी। यदु, पुरू, दृह्यु, भरत, इत्यादि जिन जनों का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है उनका कोई निश्चित भू–क्षेत्र नहीं था, वे यायावर कबीले के रूप में जीवन यापन कर रहे थे। प्रादेशिक राज्यों की स्थापना के बाद भी 'जन' राज्यों की परम्परा का प्रभाव पूर्णरूप से खत्म नहीं हुआ, क्योंकि राजसूय यज्ञ के एक अनुष्ठान में राजा के लिए जान राज्य की कामना की गयी है।[1] प्रो0 आ0एस0 शर्मा ने लिखा है जान–राज्य के माध्यम से यह इच्छा की जाती थी कि राजा अपने 'जन' का शासक बने।[2] स्पष्टतः उत्तर वैदिक युगीन राजतंत्र कमोबेस कबिलाई अवस्था में था।

इस काल में स्थाई प्रादेशिक राज्यों की स्थापना हो चुकी थी, तथा ऋग्वैदिक युग के अधिकांश 'जन' जनपदों का स्वरूप प्राप्त कर चुके थे। उनके राजा अब राष्ट्र अर्थात् प्रदेश के भी स्वामी समझे जाने लगे थे।[3] उत्तर वैदिक ग्रन्थों में एकराट् का राज्य क्षेत्र सागर सहित पृथ्वी बताया गया है, इसे प्रादेशिक राज्यों की सुदृढ़ स्थिति का अनुमान किया जा सकता है।[4] तैतरीय संहिता से पता चलता है कि इस काल के राजा 'विश' के साथ ही राष्ट्र पर भी अपनी प्रभुता स्थापित करने के लिए चिंतित थे, और प्रादेशिक राज्यों की स्थापना के फलस्वरूप ही साम्राज्यवादी मनोवृति जाग्रत हुई। समुद्रपर्यन्त वसुन्धरा का एक मात्र स्वामी बनने के लिए तत्युगीन राजाओं में वैदिक यज्ञों एवं कर्मकाण्डों की प्रवृत्ति दिखायी देने लगी। जिसके परिणामस्वरूप अश्वमेध, वाजपेय तथा ऐन्द्रमहाभिषेक प्रभृत यज्ञों की लोकप्रियता में वृद्धि हुई। ब्राह्मण ग्रन्थों में कुरू, पांचाल, कोशल और मत्स्य के अनेक राजाओं का उल्लेख है, जिन्होने अश्वमेध तथा ऐन्द्रमहाभिषे के द्वारा सार्वभौम पद प्राप्त किया था। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार जनमेजय, भीमसेन, श्रुतसेन तथा भरत व सत्रजित–शतानीक जैसे राजाओं ने सार्वभौम पद की प्राप्ति की थी।

सम्राट् पद प्राप्त करने के लिए संभवतः वाजपेय यज्ञ किया जाता था। शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ के अनुसार वाजपेय यज्ञ से सम्राट् बनते है। राज्य छोटा एवं हीन होता है तथा साम्राज्य बड़ा होता है।[5] राजा लोग सम्राट् पद की कामना करते थे। सम्राट् की वास्तविक स्थिति का ज्ञान तो नही है, किन्तु इतना अवश्य

है कि वह राजा से श्रेष्ठ समझा जाता था। ऐसा अनुमान है कि वैदिक राज्य होमर युगीन यूनानी राज्यों की भॉति आकार में छोटे रहे होगें फिर भी सम्राट् का क्षेत्र विस्तार या राज्य क्षेत्र कुछ विस्तृत अवश्य रहा होगा। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार प्राच्य देश के शासको का अभिषेक सम्राट् पद के लिए होता था।

विवेच्य युग में विभिन्न प्रकार की शासन पद्धतियों का प्रचलन द्रष्टव्य है। ज्ञात है कि ऋग्वैदिक कालीन समाज में जन राज्यों की स्थिति शासन व्यवस्था की दृष्टि से बहुमुखी प्रयोग के लिए विशेष अनुकूल नहीं थी। क्योंकि सुव्यवस्थित शासन पद्धतियों का उदय एवं विकास स्थाई प्रादेशिक राज्यों में ही संभव हो पाता है। ऋग्वेद और अथर्ववेद के साक्ष्यों के अध्ययन से राजतंत्र और जनतंत्र के मिश्रित स्वरूप का अस्तित्व शासन व्यवस्था में दिखायी देता है। यजुर्वेद एवं ब्राह्मण ग्रन्थो में कई प्रकार की शासन पद्धतियों के व्यवहार में होने का संकेत मिलता है। ऐतरेय ब्राह्मण में साम्राज्य, राज्य, स्वाराज्य, भोज्य और वैराज्य नामक पॉच शासन प्रणालियों का उल्लेख हुआ है।[6] इनमें प्रथम दो अर्थात साम्राज्य और राज्य निश्चित रूप से राजतंत्र के ही विभेद है, जिनका प्रचलन प्राच्य देश और मध्य देश में था। स्पष्ट है कि उत्तर वैदिक संहिताओं और ब्राह्मण ग्रन्थों में अधिकांश का प्रणयन मध्य देश में ही हुआ था। शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि कुरू, पांचाल के शासको ने ही राजसूय यज्ञ का सम्पादन भी विशेष रूप से किया था।[7] ब्राह्मण साहित्य में राजसूय, अश्वमेध यज्ञों का उल्लेख अनेकत्र है जिनसे नृपतंत्रात्मक राज्यों की व्यवस्था का विस्तृत संकेत मिलता है। जबकि अन्य शासन प्रणालियों के सम्बन्ध में प्रमाणित सामग्री का सर्वथा अभाव दिखता है।

महाभारत और कौटिलीय अर्थशास्त्र के विदित तथ्यों के आलोक में स्वराज्य, भोज्य और वैराज्य जन तंत्रात्मक राज्य मालूम होते हैं। इस प्रसंग में ध्यातव्य है कि उत्तर वैदिक काल का सामाजिक परिप्रेक्ष्य जनतंत्रात्मक शासन पद्धतियों के विकास हेतु विशेष अनुकूल नहीं था। इसीलिए वैराज्य स्वराज्य और भोज्य शासन प्रणालियाँ मुख्यतः वैदिक संस्कृति के हृदय स्थल मध्य देश से सुदूर और विशेष रूप से आर्य प्रभाव से मुक्त प्रदेशों में ही प्रचलित हुई।

नव उदित वर्ण–व्यवस्था के प्रभाव से जन–साधारण राजनीति से अलग एवं उसके प्रति उदासीन हो गये थे। शतपथ ब्राह्मण में एक स्थल पर यह उल्लिखित है कि ब्राह्मण राजकार्य के योग्य नहीं होता है।[8] ऐसी स्थिति में वैश्यों तथा शूद्र वर्ण के लिए तो राजनीति में पहल या प्रवेश का प्रश्न ही नही रह जाता, या राजनीति में इनका विशेष प्रवेश निश्चय ही कठिन रहा होगा। इसके फलस्वरूप राजनीतिक क्षेत्र में राजन्यो का प्रभाव क्रमशः बढ़ता ही जा रहा था। कतिपय साक्ष्य इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि 'समिति' नामक संस्था, जिसे वहुधा राष्ट्रीय सभा माना गया है, ब्राह्मण युग तक लुप्त प्राय हो गयी थी।[9] ब्राह्मण ग्रन्थों में राजसूय यज्ञ का विस्तृत विवरण दिया गया है, जिसमें 'समिति' नामक संस्था का कोई भी उल्लेख नहीं है। इससे यह प्रमाणित होता है कि उत्तर वैदिक कालीन समाज में जहॉ राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था का विकास हुआ, वही जन तंत्रात्मक संस्थाओं का अस्तित्व लुप्त प्राय हो गया।[10]

छान्दोग्य उपनिषद् में पांचालों की समिति का उल्लेख अवश्य है, जहॉ विद्वान ब्राह्मणों के साथ उपस्थित उनके राजा जैवलि ने श्वेतकेतु आरूणेय से पांच प्रश्न पूछे थे। डॉ0 के0पी0 जायसवाल महोदय ने यहॉ भी समिति को ऋग्वेद और अथर्ववेद की तरह ही राष्ट्रीय सभा तथा इसमें उपस्थित लोगों को जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि स्वीकार किया है।[11] यहाँ समिति का प्रयोग राजपरिषद् के अर्थ में हुआ प्रतीत होता है। बृहदारण्यक उपनिषद में भी श्वेतकेतु सम्बन्धी इस घटना का उल्लेख हुआ है, किन्तु यहाँ समिति के स्थान पर पांचालो की परिषद् का उल्लेख है। इन दोनों प्रसंगो में अत्यंतिक समानता को देखते हुए अनुमान होता है कि समिति और परिषद् दोनों शब्दों का प्रयोग – पर्यायवाची के रूप में हुआ है। उत्तर वैदिक संस्कृति के केन्द्र कुरू और पांचाल में यदि समिति नामक जन सभा अस्तित्व में होती तो ब्राह्मण ग्रन्थ उनके विषय में अवश्य ही उल्लेख करते। सूत्र–साहित्य तो समिति के नाम से ही अनभिज्ञ प्रतीत होते है।[12] ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार वैराज्य शासन प्रणाली का प्रचलन हिमालय से समीपवर्ती उत्तर कुरू एवं उत्तर मद्र प्रदेश में था।[13] कीथ ने वैराज्य को राजतंत्र का ही एक स्वरूप माना है।[14] किन्तु वैराज्य शब्द का सम्बन्ध राजतंत्र से जोड़ना ठीक प्रतीत नहीं होता है, क्योंकि वैराजय शब्द का प्रयोग यहाँ जनपद के लिए हुआ है, न कि राजा के लिए। काशी प्रसाद जायसवाल एवं रमेश चन्द्र मजुमदार प्रभृत विद्वान वैराज्य को जनतंत्र मानते है।[15] डॉ0 जायसवाल ने वैराज्य का अर्थ 'राजा विहीन' शासन प्रणाली किया है, किन्तु इसका शाब्दिक अर्थ केवल राजा विहीन होगा। ऐसी स्थिति में वैराज्य जनतंत्र और अराजक स्थिति दोनो का बोधक हो सकता है। अथर्ववेद में अराजक स्थिति के लिए स्पष्ट रूप से 'विराड' शब्द का उल्लेख हुआ है, केवल ऐतरेय ब्राह्मण में कल्पना के आधार पर विराड का अर्थ जनतन्त्र किया गया है। संभवतः उत्तर कुरू जैसे दूरस्थ पर्वतीय प्रदेश में वैदिक संस्कृति का प्रभाव अपेक्षाकृत देर से पड़ा । महाभारत से स्पष्ट सूचित है कि उत्तर कुरू प्रदेश में लम्बे अवधि तक विवाह की मर्यादा स्थापित नहीं हो सकी थी।[17] इससे स्पष्ट है कि परिवार व्यवस्था जो वैदिक कालीन समाज में पूर्ण रूपेण व्यवस्थित हो चुका था, यहाँ बहुत बाद में पहुँची। यह ध्यातव्य है कि परिवार और व्यक्तिगत सम्पत्ति की भावना का राज्य के विकास में अनिवार्य और महत्वपूर्ण योगदान रहा है, और सुदृढ़ सामाजिक व्यवस्था के अभाव में राजनीतिक स्थिरता की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती है। संभव है कि अथर्ववेद में वर्णित अराजकता (विराड) की स्थिति उत्तर कुरू और उत्तर–मद्र प्रदेश में अधिक समय तक विद्यमान रही हो।[18] इस अराजक स्थिति में सार्वजनिक समस्याओं पर जनता ही विचार करती होगी, इसीलिए ऐतरेय ब्राह्मण में वैराज्य के लिए सम्पूर्ण जनपद के अभिषेक की बात कही गयी है। अर्थशास्त्र में भी वैराज्य में जनता के विचारों की प्रधानता को स्वीकार किया गया है, लेकिन साथ ही जनता की असुरक्षित स्थिति एवं उदासीनता का भी वर्णन है।

उक्त तथ्य से स्पष्ट होता है कि वैराज्य एक ऐसी स्थिति थी, जिसमें राजशक्ति के अभाव में जनता के विचारों की प्रधानता रही होगी, लेकिन राजनैतिक संगठन की चेतना का अभाव रहा होगा। ऐसी स्थिति में उत्तर वैदिक काल के वैराज्य को विकसित एवं संगठित प्रजातंत्र न मानकर एक अराजक स्थिति मानना युक्ति संगत प्रतीत होता है। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार स्वराज्य शासन–प्रणाली की परम्परा पश्चिम दिशा के नीच्यों और अपाच्यों में था। कुछ विद्वान नीच्यों की स्थिति सिन्ध नदी के मुहाने के समीप माना है, और अपाच्यों को उनका पड़ोसी स्वीकार किया है।[19] उत्तर वैदिक संस्कृति का भौगोलिक परिच्छेत्र यह प्रमाणित करता है कि पंजाब से दक्षिण–पूर्ण की ओर प्रसार करते हुए वैदिक–जन, पश्चिम भारत के प्रति उदासीन रहे, जिससे स्पष्ट है कि पश्चिमी भारत का अधिकांश क्षेत्र वैदिक संस्कृति के प्रभाव से दूर रहा और इस क्षेत्र में अनार्य संस्कृति दीर्घ काल तक पल्लवित रही। यही

नहीं रंगपुर और लोथल के उत्खनन से प्राप्त अवशेषों से यह भी स्पष्ट है कि सैन्धव संस्कृति की कुछ परम्पराएं पंजाब और सिन्ध में समाप्त होने के बाद भी गुजरात और काठियावाड़ तक वैदिक संस्कृति के काल तक जीवित रही। विविध साक्ष्यों के आलोक में पश्चिमी प्रदेशों में प्रचलित स्वाराज्य शासन प्रणाली को सैन्धव सांस्कृतिक परम्पराओं से सम्बन्धित करना सर्वथा उचित प्रतीत होता है। तैतरीय ब्राह्मण में स्वाराज्य का अर्थ समान लोगो का नेता होना बताया गया है। स्वराट शासक की स्थिति गण या संघ के सभापति की थी। महाभारत से ज्ञात है कि गणों के शासन में कतिपय कुलीन परिवारों का ही हाथ था, जिनकी स्थिति समान मानी जाती थी।[20] इस प्रकार स्वाराज्य एक कुलीन तंत्रात्मक–शासन प्रणाली जान पड़ती है। जिस प्रकार की शासन पद्धति बुद्ध युगीन लिच्छवि गण में प्रचलित थी।

उत्तर वैदिक युग में विदेह में राजतंत्र का प्रचलन था, किन्तु बुद्ध युग तक यहॉ भी गणतंत्र देखने को मिलता है। संभव है इस आकस्मिक परिवर्तन के पृष्ठभूमि में सैन्धव संस्कृति का प्रभाव रहा हो। क्योंकि जहॉ स्वाराज्य शासन–प्रणाली और लिच्छवियों की शासन व्यवस्था में समानता मिलती है वही मोहन जोदड़ो से प्राप्त विशाल भवन एवं स्नानागार वैशाली के संथागार और अभिषेक पुष्करणी का स्मरण कराते है। दक्षिणात्यों में प्रचलित भोज्य शासन प्रणाली भी स्वाराज्य के समान ही गणतंत्रात्मक व्यवस्था थी। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार भोज्य शासन प्रणाली सत्वत अर्थात यादव समुदाय में प्रचलित थी। डॉ0 के0पी0 जायसवाल ने गुजरात को भोज्य लोगो का प्राचीनतम् निवास स्थान माना है।[21] भोज वर्तमान में गुजरात के स्थानीय कस्बे का नाम है। इससे लगता है कि भोज्य शासन पद्धति दक्षिण–पश्चिम की ओर प्रचलन में था। सम्भवतः भोज्य वे शासक थे जो वंशानुगत न होकर एक निश्चित काल के लिए शासक होते थे। भोज्य–शासन एक परिषद् की सहायता से चलता था। महाभारत के अनुसार वासुदेव कृष्ण ऐसे ही भोज्य संघ के प्रमुख थे, जिस संघ में अंधक, वृष्णि, यादव, कुकुर और भोज थे।[22] उत्तर वैदिक युगीन वीतहव्यों में भी संभवतः भोज्य शासन प्रणाली का ही प्रचलन था। अथर्ववेद में वीतहव्यों के सहस्त्रों की संख्या में शासन करने का उल्लेख है, जिससे उनकी भी गण तन्त्रात्मक शासन प्रणाली प्रमाणित होता है। इन वीतहव्यों का सम्बन्ध हैहयों से था जो यादवों की ही एक शाखा थे। 23 भोज्य–शासन पद्धति भी अधिकान्शतः वैदिक संस्कृति से अप्रभावित प्रदेशों में प्रचलित होने के कारण तथा स्वाराज्य से समतुल्य होने के कारण अनार्य शासन पद्धति ही प्रतीत होती है। अतएव ऋग्वैदिक युग की आर्य संस्कृति उत्तर वैदिक युगीन पूर्ववर्तिनी आर्येतर सैन्धव संस्कृति से प्रभावित हुई प्रतीत होती है और यह प्रभाव प्रादेशिक राज्य एवं उत्तर वैदिक शासन पद्धतियों में स्पष्ट परिलक्षित होता है।

**शोध का उद्देश्य**

उत्तर वैदिक काल के बाद अर्थात् 600ई0 पूर्व से भारत में दो प्रकार के राज्य व्यवस्था का विकास दिखाई देता है, एक राजतंत्र और दूसरा गणतंत्र। राजतंत्रों में 16 महाजनपद एवं गणराज्यों के अन्तर्गत 10 गणराज्य दृष्टिगत हैं। निश्चित रूप से महाजनपदों एवं गणों के विकास का बीज तत्व उत्तर वैदिक काल में ही आ गया था, क्योंकि वैदिक समाज अपना यायावर स्वरूप छोड़कर स्थायित्व ग्रहण करने के बाद जन–राज्य या राज्य के रूप में अपने को संयोजित किया। अतएवं राज्य तत्व के समुचित विकास को समझने में उत्तर वैदिक युगीन जन राज्यों को अध्ययन अत्यंत उपादेय है। इसी उद्देश्य से प्रस्तुत शोध विषय का चयन किया गया है।

**निष्कर्ष**

उत्तर वैदिक युगीन समाज का अध्ययन प्रत्येक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इस काल में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को स्थायित्व मिलने लगा था। पूर्व वैदिक युग की आर्य संस्कृति इस युग में पूर्ववर्तिनी आर्येत्तर सैन्धव संस्कृति से अधिक प्रभावित हुई तथा आर्य और आर्येत्तर सांस्कृतिक आदर्शों एवं उपलब्धियों के सामंजस्य से ही उत्तर वैदिक संस्कृति का स्वरूप स्थिर हुआ। इस समय प्रादेशिक राज्य उदित हुए और पूर्व वैदिक जन, जनपदों के रूप में स्थापित हुए। अतएव सुव्यवस्थित शासन पद्धति का विकास प्रादेशिक राज्यों से ही संभव हुआ। जो राजतंत्र और जनतंत्र दोनों में दिखता है। निष्कर्षतः इनका सम्यक अध्ययन कालान्तर में अपनायी जाने वाली शासन प्रणालियों को जानने एवं समझने के लिये महत्वपूर्ण हैं।

**अंत टिप्पणी**

1. *वाजसनेयी संहिता– 9.40*
2. *रामशरण शर्मा – आस्पेक्ट्स आक पोलिटिकल आइडियाज एण्ड इंस्टीट्यूशन्स पृ0–120*
3. *अथर्ववेद – 3, 4, 2*
4. *राधा कुमुद मुकर्जी – हिन्दू सभ्यता – पृ0–100*
5. *शतपथ ब्राह्मण – 5, 2, 1, 13*
6. *ऐतरेय ब्राह्मण – 7, 3, 14*
7. *शतपथ ब्राह्मण – 5, 5, 2, 5 द्रष्टव्य–डॉ0 वी0वी0राव उत्तर वैदिक समाज और संस्कृति*
8. *शतपथ ब्राह्मण – 5, 1 तथा 1, 12 न वै ब्राह्मणों राज्याय अलं*
9. *एन0 सी0 वन्दोपाध्याय – डेवलपमेन्ट आफ हिन्दू पालिटी एण्ड पालिटिकल थियरी, पृ0–118*
10. *यू0एन0घोषाल – हिन्दू पब्लिक लाइक पृ0– 119*
11. *हिन्दू राजतंत्र – भाग–1 पृष्ठ– 13*
12. *वी0वी0राव – उत्तर वैदिक समाज एवं संस्कृति : एक अध्ययन*
13. *ऐतरेय ब्राह्मण – 7, 3, 14 ''ये के च परेण हिमवन्तं जनपदा उत्तर कुरव उत्तर मद्रा इति वैराज्याय तेऽभिषिच्यन्ते। विराडिति तेषाभिषक्ता नाचक्षते।''*
14. *वैदिक इन्डेक्स – 2, 221*
15. *हिन्दू राजतंत्र – 1, 124 तथा कार्पोरेट लाइफ इन एन्सिएंट इण्डिया –पृ0 219*
16. *अथर्ववेद – 8, 10, 1*
17. *महाभारत – 12, 102, 26 यत्र नार्यः कामाचार भवन्ति*
18. *वी0वी0राव – उत्तर वैदिक समाज एवं संस्कृति पृ0–167*
19. *हिन्दू पालिटी, – पृ0–81*
20. *महाभारत, शान्ति पर्व – अध्याय 107 श्लोक 6*
    *जात्या च सदृशाः सवे कुजे सदृशास्तथा।*
21. *हिन्दू पालिटी – पृ0–80*
22. *महाभारत शान्तिपर्व – 81, 29*
    *यादवाः कुकुराः भोजाः सर्वेचान्धक वृष्णयः*
23. *वी0वी0राव – उत्तर वैदिक समाज एवं संस्कृति एवं अध्ययन पृ0–170*